परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी

सहज योग संस्थापिका एवं

कुण्डलिनी जागरण द्वारा आत्म–साक्षात्कार दात्री

समाज में नारी शक्ति और उसके अमूल्य गुणों का महत्व

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

(मनुस्मृति 3/56)

मैत्रेयी गार्गी

अक्का महादेवी

रानी लक्ष्मीबाई

सरोजिनी नायडू

शिवरामकृष्ण अय्यर पद्मावती

(जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है और वे पूजनीय होती हैं, वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रियों की पूजा नहीं होती है, उनका सम्मान नहीं होता है वहाँ किये गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं।)

13 सितंबर 1995 को डॉ० निर्मला श्रीवास्तव, जिन्हें प्रेम से सब श्री माताजी बुलाते हैं, ने संयुक्त राष्ट्र संघ के ''महिलाओं के सामने वैश्विक समस्याएं'' नामक चौथे विश्व सम्मेलन में जब यह वाक्य कहा तो हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। जो समाज इस मौलिक सत्य को नहीं पहचानता और जो महिलाओं को न्यायोचित महत्व नहीं देता, वह कभी समृद्ध नहीं हो सकता। आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दिन, वर्षों पहले श्री माताजी ने जो भाषण सम्पूर्ण विश्व के सामने दिया, वह बहुत ही प्रासंगिक है।

भारतीय संस्कृति की महानता हमारे देश की महान नारियों के सम्मान, गरिमा, बलिदान, अदम्य शौर्य के कारण है। भारतीय नारी ने सदियों से पुरुष के पीछे रह कर स्थितिज (Potential) ऊर्जा के रूप में कार्य किया, लेकिन जब जब जरूरत पड़ी तो उन्हीं पुरुषों का नेतृत्व कर के दुश्मन का अदम्य साहस के साथ सामना किया । वेदों में एक अविवाहित कन्या को देवी माना गया है और आज भी नवरात्रों में घर में कन्याओं को बुला कर उनकी पूजा की जाती है। उन्हें हर क्षेत्र में बराबर का अधिकार प्राप्त था, स्वयंवर अर्थात अपना वर स्वयं चुनने का अधिकार प्राप्त था। विवाह के उपरांत नारी को अर्धांगिनी माना जाता है, अर्थात ''संपूर्ण का आधा'', पति और पत्नी एक-दूसरे के साथ मिल कर ही पूरे हैं।

हमारे देश में दार्शनिक, कवयित्री, संत, राज शासन संभालने वाली अनेकों विदुषी महिलायें हुई हैं। प्राचीन काल में चाहे मैत्रयी व गार्गी जैसी विदुषी हों या वह पतिव्रता सावित्री, जो यमराज से अपने पति के प्राण वापिस ले आई हो या कैकई जो अपने पति की सारथी बनी और युद्ध क्षेत्र से उन्हें जीवित बचा लाई या फिर सीता जो सब कुछ ठुकरा कर अपने पति के साथ वन में चली गई हो या शबरी जो भक्ति की पराकाष्ठा थी। मध्ययुगीन भारत में महान गणितज्ञ भास्कर ने अपनी पुस्तक का नाम अपनी पुत्री लीलावती पर रखा, उस समय अनेक रानियाँ हुईं, जिन्होंने अपने राज्यों को संभाला और प्रजा के लिए अनेक अच्छे कार्य किए। ऐसी रानियों में मगध की रानी कुमारदेवी, काश्मीर की रानी दीदा, सातवाहन वंश की रानी नागनिका, मेवाड़ की रानी कुर्मादेवी, जिसने कुतुबदीन ऐबक को हराया था प्रमुख हैं। अंडाल, कराइक्कल अम्मायैर, आतुकुरि मोल्ला, अक्का महादेवी, लाल देद, सूर्याबाई, मुक्ता बाई, मीरा बाई जैसे अनेकों कवयित्री हुईं। अनेकों रानियों ने आक्रमणकारियों को लोहे के चने चबवा दिए, इनमें रानी दुर्गावती, चाँदबीबी, राजमाता जीजा बाई, महारानी अहिल्या बाई होलकर, तारा बाई, रानी चेन्नाम्मा, रानी मयनला और रानी लक्ष्मीबाई प्रमुख हैं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी महिलाओं का अनुपम योगदान रहा है। इस समय में भी बहुत सी महिलाओं ने अपने समय से आगे जा कर, बहुत कठिनाइयों का सामना करके उच्च शिक्षा को प्राप्त किया और अपने साथ और बाद आने वाली महिलाओं के लिए पथ प्रदर्शन किया। इनमे से प्रमुख हैं, आनंदी गोपाल जोशी - प्रथम महिला डाक्टर, जस्टिस अन्ना चंडी - पहली महिला जज, श्री माताजी की माँ कॉर्नेलिया सालवे - पहली महिला जिन्होंने गणित में ऑनर्स प्राप्त किया था।

मध्यकालीन भारत पर अनेक विदेशी आक्रमणों के कारण महिलाओं की स्थिति खराब होती चली गई, उन्हें आक्रमणकारियों से बचाने के लिए पर्दा प्रथा, जौहर, सती प्रथा शुरू हो गई, उनका घर से बाहर निकालना व शिक्षा के अवसर बंद हो गए, दहेज प्रथा शुरू हो गई और पुरुष की अर्धांगिनी माने जाने वाली अब पुरुष से कमजोर हो गई, सदाचार के नियम महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग-अलग हो गए, उसके आगे बढ़ने के सभी रास्ते बंद हो गए और महिलाओं की स्थिति बद से बदतर होती चली गई। पुरुष मानव समाज में उनका महत्व और स्त्री स्वयं की उचित भूमिका भूल गईं हैं। जब तक हम एक नई सभ्यता नहीं लाते जिस में महिलाएं अपने आत्म सम्मान को विकसित कर सकती हैं, तब तक वे अपनी स्त्रीयोचित महानता को प्राप्त नहीं करेंगी।

दुर्भाग्यवश पुरुषों ने स्त्रियों पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए हमेशा बाहुबल का प्रयोग किया है। उन्होंने यह नहीं पहचाना कि स्त्रियां उनसे भिन्न होते हुए भी मानवीय कार्यों में उनकी पूरक और बराबर की भागीदार हैं। कट्टरपंथी तत्त्वों के कारण या गावों में पुरुषों द्वारा महिलाओं को दबाने के कारण बच्चे अपनी माँ का सम्मान नहीं करते हैं और उनकी बात नहीं मानते हैं, जिस कारण आज के समय में मां और बच्चे के बीच का संबंध कमजोर पड़ गया है और कई बच्चे लावारिस और हिंसक बन गए हैं। हमें महिलाओं से अधिक पुरुषों को शिक्षित करने की आवश्यकता है, क्योंकि युद्ध और हिंसा का विचार सिर्फ पुरुषों की ओर से आता है। मां का प्रेम भरा प्रशिक्षण बच्चों को सुंदर नागरिक के रूप में गढ़ने के लिए पहली और सबसे प्रभावशाली शक्ति है।

यहां पर यह सुझाव नहीं दिया जा रहा है कि मानव समाज में महिलाओं की भूमिका सिर्फ मां की, बच्चों की जननी और पालक की ही है, या केवल पत्नी की, या बहन की ही है। महिलाओं को जीवन के हर क्षेत्र-सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, राजनीतिक, आर्थिक, प्रशासनिक इत्यादि में भाग लेने का बराबर का अधिकार है और वर्तमान में महिलायें हर क्षेत्र में आगे आ भी रहीं हैं चाहे वह राजनीति हो, खेल या विज्ञान। महिलाएं जीवन के किसी भी पहलू में मुख्य भूमिका ले सकती हैं, परंतु यह बहुत महत्वपूर्ण है कि चाहे वे किसी भी भूमिका में हों, वे यह न भूलें वे महिलाएं हैं और उन्हें उस में मातृ प्रेम और ममता से भरी गहरी विचारधारा को प्रकट करना है। अगर वह मर्दाना और आक्रामक हो जाती हैं, तब समाज के संतुलन को कायम नहीं रखा जा सकता।

साथ ही, जब हम महिलाओं के अधिकारों की मांग करते हैं, तब हमें उनके मानव समाज के प्रति मौलिक कर्तव्यों पर भी ध्यान देना चाहिए। उनके पास अब वह सुखदायक और मधुर गुण नहीं है जो शांति और संतुलन ला सकते हैं। इस के विपरित वो प्रभुत्व जमाने वाली और सुख खोजने वाली व्यक्ति बन गई हैं। यह सब हमें एक अराजक समाज की ओर ले जाता है और ऐसे समाज में बड़े होने वाले बच्चे युद्ध की तैयारी करते हुए बड़े होते हैं।

हमें आवश्यकता है दोनों अतिष्यताओं के बीच में संतुलन की। हमें ऐसी महिलाओं की आवश्यकता है जो पुरुषों से भिन्न, परंतु बराबर की भागीदार हों, जो पुरुषों के व्यवहार की सूक्ष्म समझ रखती हों और यह जानती हों कि किस प्रकार उन्हें, उनके आंतरिक संतुलन में लाना है। आप कह सकते हैं कि सोचने में यह सब बहुत बढ़िया है, लेकिन हम इस संतुलन की स्थिति को कैसे प्राप्त करें? हम वर्तमान की संघर्ष और भ्रम की स्थिति को कैसे समाप्त करें? इन सब प्रश्नों का एक उत्तर है। एक नया तरीका है।

सहज योग ध्यान

हमारी उत्क्रांति और आध्यात्मिक उन्नति के लिए, हमारी रीड की हड्डी में सात चक्र और ईश्वर की शक्ति जिसे कुण्डलिनी कहते हैं, स्थित है। ये सभी चक्र हमारे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए उत्तरदायी हैं। जब कुंडलिनी जागृत होती है, तो वह चक्रों को पोषित करती है और उन्हें संघटित करती हुई हमें परमात्मा के दिव्य प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से जोड़ देती है। इस को बाइबल में 'Cool Breeze of Holy Ghost', कुरान में 'रूह', और भारतीय ग्रंथों में 'परमचैतन्य' कहा जाता है।

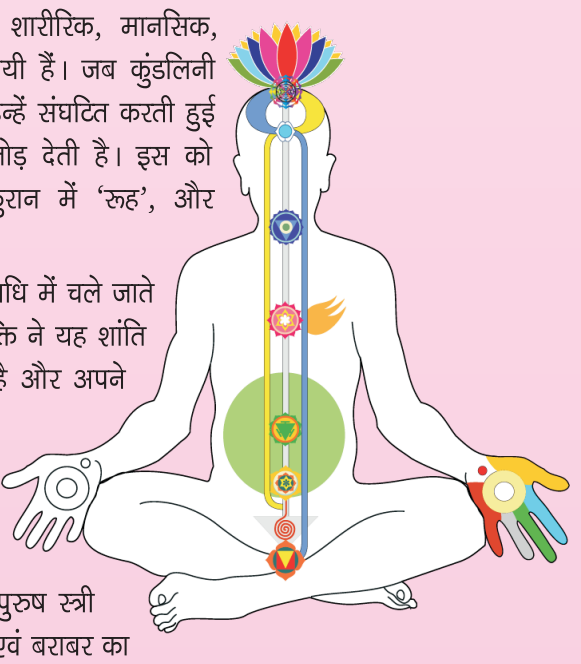

जब कुंडलिनी का जागरण होता है तो आप निर्विचार समाधि में चले जाते हैं तब आप अंदर से एकदम शांत हो जाते हैं। जिस व्यक्ति ने यह शांति प्राप्त कर ली है, वह शांति को प्रसारित करने लगता है और अपने चारों ओर एक शांतिपूर्ण वातावरण निर्मित करता है।

जब पुरुषों व स्त्रियों में यह शांति प्रस्थापित हो जाएगी तो वे मिलकर एक ऐसे समाज का निर्माण करने में सक्षम होंगे जहां कोई किसी को दबाने का प्रयास नहीं करेगा। दोनों एक दूसरे का सम्मान करने लगेंगे और पुरुष स्त्री को अपने से तुच्छ मानने के स्थान पर उसे अपने पूरक एवं बराबर का भागीदार मानने लगेगा। महिलाओं में आत्म सम्मान विकसित होगा। ऐसे समाज के बच्चे भी, अपनी माँ का सम्मान करने लगेंगे, और उनके प्रेम से सरोबर हो कर एक और अधिक उज्जवल समाज का निर्माण करेंगे।

''यदि अहिंसा हमारे अस्तित्व का नियम है, तो हमारा भविष्य महिलाओं में निहित है।'' (महात्मा गांधी)

आत्मसाक्षात्कार का अनुभव प्राप्त करने के लिये नीचे दी गयी वेबसाईट पर जायें

https://www.nirmaldham.org/experience-peace-within/ • https://www.youtube.com/c/EMeditateEverydaywithSahajaYoga

सहज दर्शन प्रचार और प्रसार समिति

sahajayoga.org.in • nirmaldham.org • sahajayogamumbai.org • atmajagrati@gmail.com

Toll Free 1800-2-700-800 • NCR - 93101 77207 • Mumbai - 98203 15343 • Jhansi - 98891 58145 • Dehradun - 94120 47547